(फ़ज़ाइले दुआ किताब से लिये गए मवाद की छटी क़िस्त)

Kin Logon Ki Duaa Qabool Hoti Hai (Hindi)

किन लोगों की दुआ क़बूल होती है

सफ़हात 17

मुसन्निफ़ : रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رضی اللہ عنہ

शारेह : आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत,
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رضی اللہ عنہ

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**किन लोगों की दुआ क़बूल होती है**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश की है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

यह मज़्मून ''फ़ज़ाइले दुआ'' के सफ़्हा 218 ता 232 से लिया गया है।

किन लोगों की दुआ क़बूल होती है

दुआए अत्तार

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई रिसाला : ''**किन लोगों की दुआ क़बूल होती है**'' के 17 सफ़्ह़ात पढ़ या सुन ले उस की दुआओं पर रह़मत की ख़ास नज़र फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़फ़िरत फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हर क़तरे से फ़िरिश्ता पैदा होता है

अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : अल्लाह पाक का एक फ़िरिश्ता है कि उस का बाज़ू मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में। जब कोई शख़्श मुझ पर मह़ब्बत के साथ दुरूद भेजता है वोह फ़िरिश्ता पानी में गोत़ा खा कर अपने पर झाड़ता है, अल्लाह पाक उस के परों से टपकने वाले हर हर क़त़रे से एक एक फ़िरिश्ता पैदा करता है वोह फ़िरिश्ते क़ियामत तक उस दुरूद पढ़ने वाले के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं। (القول البدیع ص251)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़स्ले हश्तुम उन लोगों के बयान में जिन की दुआ क़बूल होती है ।

قال الرضاء : वोह उन्नीस[19] हैं । आठ[8] ह़ज़रते मुसन्निफ़ قُدِّسَ سِرُّہٗ ने ज़िक्र फ़रमाए और ग्यारह[11] फ़क़ीर غَفَرَاللّٰہُ تَعَالٰی لَہٗ ने ज़ाइद किये ।﴾

अव्वल (1) : मुज़्त़र (बेचैन व परेशान हाल) ।

قال الرضاء : इस की त़रफ़ तो खु़द कुरआने अ़ज़ीम में इशारा मौजूद :

﴿اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَیَكْشِفُ السُّوْٓءَ﴾. ﴾[1]

दुवुम (2) : मज़्लूम अगर्चे फ़ाजिर हो, अगर्चे काफ़िर हो ।

قال الرضاء : ह़दीस में है : ‘‘अल्लाह तआ़ला उस से फ़रमाता है :

((وعزتي لأ نصرنّک ولو بعد حين))

‘‘मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम बेशक ज़रूर मैं तेरी मदद करूंगा अगर्चे कुछ देर के बा’द ।’’﴾[2]

सिवुम (3) : बादशाहे आ़दिल ।

चहारुम (4) : मर्दे सालेह़ ।

---

1 तरजमए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है, जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई । (پ ٢٠، النمل:٦٢)

2 ”سنن الترمذي“، كتاب الدعوات، باب في العفو والعافية، الحديث: ٣٦٠٩، ج٥، ص٣٤٣.

”سنن ابن ماجه“ كتاب الصيام، باب في الصائم لا تردّ دعوته، الحديث: ١٧٥٢، ج٢، ص٣٤٩-٣٥٠.

www.dawateislami.net

पन्जुम (5) : मां बाप का फ़रमां बरदार ।

शशुम (6) : मुसाफ़िर ।

قال الرضاء: رواه ابن ماجه والعقيلي والبيهقي عن أبي هريرة رضي اللّٰه تعالٰى عنه والبزار وزاد: ((حتى يرجع)) والضياء عن أنس وأحمد والطبراني عن عقبة بن عامر رضي اللّٰه تعالٰى عنهم. (1)

मुतअ़द्दद अह़ादीस में इर्शाद हुवा कि ''इस की (या'नी मुसाफ़िर की) दुआ ज़रूर मुस्तजाब है, जिस में कुछ शक नहीं ।''

رواه أحمد والبخاري في "الأدب المفرد" وأبو داود والترمذي عن أبي هريرة ومنها حديث ابن ماجه والضياء المذكوران. (2)

---

1 मुसाफ़िर की दुआ की क़बूलिय्यत वाली ह़दीस को इब्ने माजह, अ़क़ीली, बैहक़ी और बज़्ज़ार ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया जब कि बज़्ज़ार ने "**حتى يرجع**" (यहां तक कि लौट आए) के अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया, और इसी ह़दीस को ज़िया ने ह़ज़रते अनस और अह़मद व त़बरानी ने ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत किया ।

"سنن ابن ماجه"، باب دعوة الوالد ودعوة المظلوم، الحديث: ٣٨٦٢، ج٤، ص٢٨١.

"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣١٦، ج١، الجزء الثاني، ص٤٤، (*بحوالہ بزار*).

2 इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने ''मुस्नदे अह़मद'' में और बुख़ारी ने ''अल अदबुल मुफ़्रद'' में और अबू दावूद व तिरमिज़ी ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया, और इन मुतअ़द्दद अह़ादीस में से इब्ने माजह और ज़िया की रिवायत कर्दा मज़्कूरा बाला ह़दीसे मुबारका भी है ।

"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٧٥١٣، ج٣، ص٧١.

و"الأدب المفرد"، باب دعوة الوالدين، الحديث: ٣٢، ص١٩.

www.dawateislami.net

बज़्ज़ार के यहां ह़दीसे अबू हुरैरा इन अल्फ़ाज़ से है : ''तीन शख़्स हैं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ पर ह़क़ है कि इन की कोई दुआ़ रद न करे : रोज़ादार ता इफ़्त़ार और मज़्लूम ता इन्तिक़ाम और मुसाफ़िर ता रुजूअ़ ।''﴾[1]

हफ़्तुम (7) : रोज़ादार ।

قال الرضاء : ख़ुसूसन वक़्ते इफ़्त़ार ।﴾

हश्तुम (8) : मुसल्मान कि मुसल्मान के लिये उस की **ग़ैबत** (ग़ैर मौजूदगी) में दुआ़ मांगे ।

قال الرضاء : ह़दीस शरीफ़ में है :

''येह दुआ़ निहायत जल्द क़बूल होती है ।'' फ़िरिश्ते कहते हैं :

((آمین ولک بمثل ذالک))

''उस के ह़क़ में तेरी दुआ़ क़बूल और तुझे भी इसी त़रह़ की ने'मत हुसूल ।''[2]

दूसरी ह़दीस में फ़रमाया :

''येह दुआ़ ह़ाजी व ग़ाज़ी व मरीज़ व मज़्लूम की दुआ़ओं से भी ज़ियादा जल्द क़बूल होती है ।''

البيهقي في "الشعب" بسند صالح عن ابن عباس رضي الله تعالىٰ

---

1 "كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣١٦، ج١، الجزء الثاني، ص٤٤، (بحوالہ بزار).

2 "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب الدعاء بظهر الغيب، الحديث:١٥٣٤-١٥٣٥، ج٢، ص١٢٦-١٢٧.

و"صحيح مسلم"، كتاب الذكر والدعاء، باب فضل الدعاء للمسلمين بظهر الغيب، الحديث: ٢٧٣٢-٢٧٣٣، ص١٤٦٢.

www.dawateislami.net

عنهما : ((خمس دعوات يستجاب لهن)) فذكرهن وقال: ((وأسرع هذه الدعوات إجابة دعوة الأخ لأخيه بظهر الغيب)).[1]

बल्कि तीसरी ह़दीस में इर्शाद हुवा कि ''इस से ज़ियादा जल्द क़बूल होने वाली कोई दुआ नहीं।''

رواه الترمذي عن عبد الله بن عمر رضي الله تعالى عنهما ونحوه للطبراني وغيره عن عبد الله بن عمر رضي الله تعالى عنهما.[2]

चौथी ह़दीस शरीफ़ में आया : ''येह दुआ रद नहीं होती।''

البزار عن عمران بن حصين رضي الله تعالى عنهما.[3]

---

❶ बैहक़ी ''शुअ़बुल ईमान'' में सालेह़ सनद के साथ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं : पांच दुआएं मक़्बूल हैं : फिर वोह ज़िक्र कीं या'नी मज़्लूम, ह़ाजी, मुजाहिद कि जिहाद के लिये निकले, मरीज़ और मुसल्मान की मुसल्मान के लिये उस की ग़ैर मौजूदगी में दुआ करना फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इन में निहायत जल्द क़बूल होने वाली दुआ, एक मुसल्मान की अपने मुसल्मान भाई के लिये उस की ग़ैर मौजूदगी में मांगी गई दुआ है।

''شعب الإيمان''، الحديث: ١١٢٥، ج٢، ص٤٦-٤٧

❷ इस ह़दीस को तिरमिज़ी और इसी की मिस्ल त़बरानी और दीगर मुह़द्दिसीने किराम ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया।

"سنن الترمذي"، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في دعوة الأخ... إلخ، الحديث:٣٨٥، ج٣، ص٣٩٥.

❸ इस ह़दीस को बज़्ज़ार ने इ़मरान बिन ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया।

"مسند البزار"، الحديث:٣٥٧٧، ج٩، ص٥٢.

www.dawateislami.net

नहुम (9) : قـال الـرضـاء : वालिदैन की दुआ अपनी औलाद के ह़क़ में, एक ह़दीस शरीफ़ ज़िक्र की जाती है कि ''येह दुआ उम्मत के लिये दुआए नबी के मिस्ल होती है।''

رواه الديلمي عن أنس رضي اللّٰه تعالٰى عنه.[1]

दहुम (10) : قـال الـرضـاء : औलाद की दुआ वालिदैन के ह़क़ में।

أبو نعيم عن واثلة بن الأسقع رضي اللّٰه تعالٰى عنه عن النبي صلى اللّٰه تعالٰى عليه وسلم : ((أربـع دعواتهم مستجابة: الإمام العادل والرجل يدعو لأخيه بظهر الغيب ودعوة المظلوم ورجل يدعو لوالديه)).[2]

याज़्दहुम (11) : قـال الـرضـاء : ह़ाजी की दुआ जब तक अपने घर पहुंचे।

ह़दीस शरीफ़ में है : ''जब तू ह़ाजी से मिले, उसे सलाम कर और मुसाफ़ह़ा कर और दरख़्वास्त कर कि वोह तेरे लिये इस्तिग़फ़ार करे, क़ब्ल इस के कि वोह अपने घर में दाख़िल हो कि वोह मग़्फ़ूर है।''

أخرجه الإمام أحمد عن ابن عمر رضي اللّٰه تعالٰى عنهما.[3]

---

1 इस ह़दीस को दैलमी ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

"المسند الفردوس" للديلمي، الحديث:٢٨٥٩، ج١، ص٣٨٦

2 अबू नुऐम, वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से और वोह मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से रावी : चार आदमियों की दुआएं क़बूल हैं : (1) आ़दिल बादशाह, (2) वोह शख़्स कि अपने मुसल्मान भाई की ग़ैर मौजूदगी में उस के लिये दुआ करे, और (3) मज़्लूम की दुआ, और (4) वोह शख़्स जो अपने वालिदैन के लिये दुआ करे।

"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٢٣٠٢، ج١، الجزء الثاني، ص٤٣

3 इस ह़दीस की तख़्रीज इमाम अह़मद ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से की।

"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، ج٢،ص٣٥١، الحديث:٥٣٧١

www.dawateislami.net

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : ''ह़ाजी की दुआ रद नहीं होती, जब तक पलटे।''

البيهقي والديلمي ويأتي.[1]

दुवाज़्दहुम (12) : قال الرضاء : उ़म्रह करने वाला।

ह़दीस शरीफ़ में है : ''ह़ज व उ़म्रह वाले ख़ुदा के मेहमान हैं, देता है उन्हें जो मांगें और क़बूल फ़रमाता है जो दुआ करें।''

رواه البيهقي (इस ह़दीस को बैहक़ी ने रिवायत किया)।[2]

सीज़्दहुम (13) : قال الرضاء : मरीज़, कि नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

''जब बीमार के पास जाओ, उस से अपने लिये दुआ चाहो कि उस की दुआ मिस्ले दुआए मलाएका है।''[3] رواه ابن ماجه عن عمر رضي الله تعالى عنه.

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : ''मरीज़ की दुआ रद नहीं होती, यहां तक कि अच्छा हो।''

---

1 इस ह़दीसे मुबारका को बैहक़ी और दैलमी ने रिवायत किया और येह ह़दीसे मुबारका आगे (हफ़्दहुम में) आएगी।

"شعب الإيمان"، باب في الرجاء من اللّٰه تعالى، ذكر فصول في الدعاء... إلخ، الحديث:١١٢٥، ج٢، ص٤٧.

2 "شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الحج والعمرة، الحديث: ٤١٠٦-٤١٠٩، ج٣، ص٤٧٦-٤٧٧.

3 इस ह़दीस को इब्ने माजह ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।

"سنن ابن ماجه"، كتاب الجنائز، باب ما جاء في عيادة المريض، الحديث: ١٤٤١، ج٢، ص١٩١.

www.dawateislami.net

رواه ابن أبي الدنيا ونحوه عند البيهقي والديلمي عن ابن عباس رضي الله تعالٰى عنهما.[1]

चहार दहुम (14) : قال الرضاء : हर मोमिन मुब्तलाए बला या'नी बलाए दुन्यवी व जिस्मानी। येह मरीज़ से आ़म है।

ह़दीस शरीफ़ में है : सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इर्शाद हुवा : "ऐ सलमान ! बेशक मुब्तला की दुआ़ मुस्तजाब है।"

الديلمي عنه رضي الله تعالٰى عنه.[2]

दूसरी ह़दीस शरीफ़ में है : "मोमिने मुब्तला की दुआ़ ग़नीमत जानो।"

أبو الشيخ عن أبي الدرداء رضي الله تعالٰى عنه.[3]

पांज़्दहुम (15) : قال الرضاء : जो यादे ख़ुदा ब कसरत करता हो।

ह़दीस शरीफ़ में है : "तीन शख़्सों की दुआ़ अल्लाह तआ़ला रद नहीं करता : एक वोह कि ख़ुदा की याद ब कसरत करे और

---

1 इस ह़दीस को इब्ने अबिद्दुन्या और इसी की मिस्ल बैहक़ी और दैलमी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।
"شعب الإيمان"، باب في الرجاء من الله تعالى، ذكرفصول في الدعاء... إلخ، الحديث: ١١٢٥، ج٢، ص٤٧.

2 इस ह़दीस को दैलमी ने ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।
"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣٦٥، ج١، الجزء الثاني، ص٤٧، (بحوالہ دیلمی).

3 इस ह़दीस को अबुश्शैख़ ने ह़ज़रते अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया।
"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣٠٥، ج١، الجزء الثاني، ص٤٣، (بحوالہ ابوالشیخ).

www.dawateislami.net

मज़्लूम और बादशाहे आ़दिल ।''

رواه البيهقي عن أبي هريرة رضي الله تعالٰى عنه.[1]

शांज़्दहुम (16) : قال الرضاء : जो तन्हा जंगल में जहां उसे अल्लाह के सिवा कोई न देखता हो खड़ा हो कर नमाज़ पढ़े ।

ابن مندة وأبو نعيم في الصحابة عن ربيعة بن وقاص رضي الله تعالٰى عنه عن النبي صلى الله تعالٰى عليه وسلم : ((ثلاثة مواطن لا تردّ فيها دعوة عبد: رجل يكون في بَرِيَّة بحيث لا يراه أحد إلا الله فيقوم فيصلي)). الحديث[2]

हफ़्दहुम (17) : قال الرضاء : ग़ाज़ी कि ग़ज़ाए कुफ़्फ़ार के लिये निकले (या'नी कुफ़्फ़ार से जिहाद करने के लिये निकले) जब तक वापस आए ।

---

1 इस ह़दीस को बैहक़ी ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया । "شعب الإيمان"، باب في محبة الله عزوجل، فصل في إدامة ذكر الله عزوجل، الحديث:٥٨٨، ج١، ص٤١٩.

2 इब्ने मन्दह व अबू नुऐम **''मा'रिफ़तिस्सह़ाबा''** में ह़ज़रते रबीआ़ बिन वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : तीन मक़ामात ऐसे हैं कि इन में बन्दे की दुआ़ रद नहीं की जातीं, इन में से एक वोह बन्दा जो जंगल में खड़ा हो कर इस ह़ाल में नमाज़ अदा करे कि उसे उस के रब عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई न देखता हो । (अल ह़दीस)

"معرفة الصحابة"، لأبي نعيم، ربيعة بن وقاص، الحديث: ٢٧٩٢، ج٢، ص٢٩٨، بألفاظ متقاربة.

www.dawateislami.net

الـديـلـمي عن ابن عباس رضـي الـلّٰـه تـعالٰى عنهما : ((أربع دعوات لاتردّ: دعوة الحاج حتى يرجع ودعوة الغازي حتى يصدر)) الحديث. (1)

ولـلـبيهـقـي عـنـه بـإسناد متماسک: ((خمس دعوات يستجاب لهن)) فذكر نحوه. (2)

ख़ुसूसन जब कि مَعَاذَاللّٰه और साथी भाग जाएं और येह साबित क़दम रहे, (3) **وهـوفي تتمة حديث ربيعة المارِّ.**

हज़्दहुम (18) : قـال الـرضـاء : जिस शख़्स ने किसी पर एह़सान किया अपने मोह़सिन के ह़क़ में उस की दुआ रद नहीं होती।

الديلمي عن ابن عمر رضي اللّٰه تعالٰى عنهما عن النبي صلى اللّٰه عليه وسلم: ((دعاء المحسن إليه للمحسن لا يردّ)). (4)

---

1 दैलमी ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रावी कि चार दुआएं रद नहीं की जाती : ह़ाजी की दुआ जब तक कि लौट न आए और ग़ाज़ी की दुआ यहां तक कि वापस हो।

(अल ह़दीस)

"كنز العمال"، كتاب الأذكار، الحديث:٣٣٠١، ج١، ص٤٣، (بحوالہ دیلمی)

2 और बैहक़ी ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से अस्नादे मुतमासिक के साथ रिवायत किया कि पांच क़िस्म के लोगों की दुआएं क़बूल होती हैं फिर मज़्कूरा बाला अफ़राद का ज़िक्र फ़रमाया।

"شعب الإيمان"، باب في الرجاء من اللّٰه تعالى، الحديث:١١٢٥، ج٢، ص٤٧

3 या'नी : और इस का तज़्किरा रबीअ़ा बिन वक़्क़ास से मज़्कूरा बाला रिवायत कर्दा ह़दीस के आख़िर में है।

4 दैलमी ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से रिवायत किया कि जिस शख़्स ने किसी पर एह़सान किया तो एह़सान करने वाले के ह़क़ में उस की दुआ रद नहीं होती।

"المسند الفردوس" للديلمي، ج١، ص٣٨٦، الحديث:٢٨٦٣.

www.dawateislami.net

नूज़्दहुम (19) قال الرضاء : जमाअ़ते मुसल्मानान कि मिल कर दुआ करें, बा'ज़ दुआ करें बा'ज़ आमीन कहें।

الطبراني والحاكم والبيهقي عن حبيب بن مَسْلَمة الفِهْرِيِّ رضي الله تعالٰى عنه : ((لا يجتمع ملأ فيدعو بعضهم ويؤمّن بعضهم إلّا أجابهم الله تعالٰى)).[1]

येह ग्यारह[11] कि फ़क़ीर ने ज़िक्र किये इन में सिवाए नहुम[9] व दहुम[10] के बाक़ी नव[9] साहिबे "हिस्ने ह़सीन" से भी रह गए।

فالحمد لله على حسن التوفيق.[2]

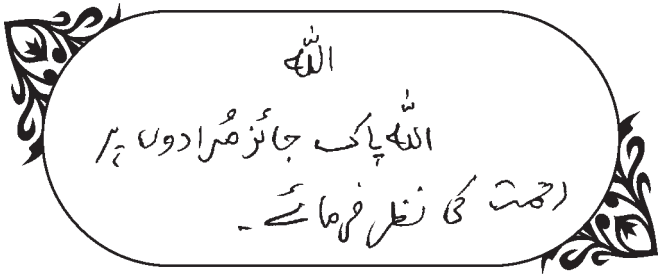

---

1 त़बरानी, ह़ाकिम और बैहक़ी ने ह़ज़रते ह़बीब बिन मुस्लिमा फ़हरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया कि मुसल्मान जम्अ़ हों उन में बा'ज़ दुआ करें, और बा'ज़ आमीन कहें तो अल्लाह तआ़ला उन की दुआ क़बूल फ़रमाता है।

"المستدرك" للحاكم، حبيب بن مسلمة الفهرى كان مجاب الدعوة، الحديث: ٥٥٢٩، ج٤، ص٤١٧.

و"المعجم الكبير"، الحديث:٣٥٣٦، ج٤، ص٢٢.

2 इस हुस्ने तौफ़ीक़ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये सब ख़ूबियां।

www.dawateislami.net

फ़स्ले नहुम

उन आ'माले सालिहा में जिन के करने वाले को किसी दुआ की ह़ाजत नहीं ।

قال الرضاء : येह फ़स्ल अगर्चे इस रिसाले में नहीं मगर इस मज़मून को ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम قُدِّسَ سِرُّهٗ ने किताब ''**अल जवाहिर**''(1) में इफ़ादा फ़रमाया फ़क़ीर غَفَرَاللّٰهُ تَعَالٰی لَهٗ ब वज्हे जलालते फ़ाएदा व अ़ज़मते आ़एदा (या'नी अ़ज़ीम फ़ाएदा और मन्फ़अ़त के पेशे नज़र) इसे यहां ज़िक्र करता है, वोह तीन[3] चीज़ें हैं :

अव्वल (1) : दुरूद शरीफ़ ।

इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व ह़ाकिम ब असानीदे सह़ीह़ा जय्यिदा ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं : जब चहारुम शब गुज़रती थी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم खड़े हो कर फ़रमाते :

''ऐ लोगो ! ख़ुदा की याद करो, ख़ुदा की याद करो, आई **राजिफ़ा**(2), इस के बा'द आती है **रादिफ़ा**(3) आई मौत उन चीज़ों के साथ जो उस में हैं ।''

मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ! मैं दुआ़ बहुत

---

1 "جواهر البيان في أسرار الأركان"، فصل چهارم، ص١٨٥-١٨٦

2 राजिफ़ा से मुराद है क़ियामत का पहला नफ़्ख़ा चूंकि इस नफ़्ख़े से ज़मीन में सख़्त ज़ल्ज़ला पड़ जावेगा ।

(مرآة المناجيح"، باب البكاء والخوف، الفصل الأول، ج٧، ص١٥٧)

3 रादिफ़ा से मुराद दूसरा नफ़्ख़ा जिस से मुर्दे जी उठेंगे ।

(مرآة المناجيح"، باب البكاء والخوف، الفصل الأول، ج٧، ص١٥٧)

www.dawateislami.net

किया करता हूं इस में से हुज़ूर के लिये किस क़दर मुक़र्रर करूं ?

फ़रमाया : ''जितनी चाहे।''

मैं ने अ़र्ज़ की : चहारुम।

फ़रमाया : जिस क़दर चाहे, और ज़ियादा करे तो तेरे लिये बेहतर है।

मैं ने अ़र्ज़ की : निस्फ़।

फ़रमाया : ''जितनी चाहे, और ज़ियादा करे तो तेरे लिये बेहतर है।''

मैं ने अ़र्ज़ की : अपनी कुल दुआ हुज़ूर के लिये कर दूं, या'नी अपनी कुल दुआ के इ़वज़ हुज़ूर पर दुरूद भेजा करूं ?

फ़रमाया : ''ऐसा करेगा तो अल्लाह तआ़ला तेरे सब मुहिम्मात (अहम और मुश्किल कामों में) किफ़ायत करेगा और तेरे गुनाह बख़्श देगा।''[1]

अह़मद व त़बरानी ब अस्नादे ह़सन रावी : **وهذا حديث الطبراني** (या'नी येह त़बरानी की ह़दीस के अल्फ़ाज़ हैं) कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मैं अपनी तिहाई दुआ हुज़ूर के लिये करूं ?

फ़रमाया : ''अगर तू चाहे।''

अ़र्ज़ की : दो तिहाई।

फ़रमाया : ''हां''

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب صفة القيامة، باب في ترغيب في ذكر الله... إلخ، الحديث:٢٤٦٥، ج٤، ص٢٠٧.

و"المستدرك"، كتاب التفسير، الحديث:٣٦٣١، ج٣، ص١٩٨.

و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث:٢١٢٩٩-٢١٣٠٠، ج٨، ص٥٠.

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : कुल दुआ के इ़वज़ दुरूद मुक़र्रर करूं।

फ़रमाया : ''ऐसा करेगा तो ख़ुदा तेरे दुन्या व आख़िरत के सब काम बना देगा।''(1)

और बेशक दुरूद सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये दुआ़ है और जिस क़दर इस के फ़वाइद व बरकात मुसल्ली (या'नी दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले) पर आ़इद होते हैं हरगिज़ हरगिज़ अपने लिये दुआ़ में नहीं बल्कि इन के लिये दुआ़ तमाम उम्मते मर्हूमा के लिये दुआ़ है कि सब इन्हीं के दामने दौलत से वाबस्ता हैं।

سلامتِ همه آفاق در سلامت تُست(2)

दुवुम (2) : ज़िक्रे इलाही।

बैहक़ी ने ''शुअ़बुल ईमान'' में बुकैर बिन अ़तीक़ उन्हों ने सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह उन्हों ने अपने बाप अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर उन्हों ने अपने वालिद ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म उन्हों ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم, हुज़ूर ने रब्बुल इ़ज़्ज़त ज़िल जलाल تَقَدَّسَتْ أَسْمَاؤُهُ से रिवायत की, कि फ़रमाता है :

((من شغله ذكري عن مسألتي أعطيتُه أفضل ما أعطي السائلين))

''जिसे मेरी याद मेरे मांगे से बाज़ रखे, मैं उसे बेहतर उस अ़ता

---

1 "المعجم الكبير"، الحديث:٣٥٧٤، ج٤، ص٣٥.
و"المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٢١٣٠٠، ج٨، ص٥٠.

2 *मैं क्या बताऊं तमन्नाए ज़िन्दगी क्या है*
हुज़ूर आप सलामत रहें कमी क्या है

www.dawateislami.net

का बख़्शूं जो मांगने वालों को दूं।"[1]

इसी वासिते हज़रते सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने तमाम मुद्दत वुकूफ़ में ज़िक्रे इलाही पर इक़्तिसार किया और ता ग़ुरूबे आफ़्ताब (या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब तक)

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ، لَا إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ، لَا إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّ آبَائِنَا الْأَوَّلِيْنَ

कहते रहे।[2]

सिवुम (3) : तिलावते क़ुरआने मजीद।

नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم अपने रब्बे जलील तबारक व तआ़ला से रिवायत फ़रमाते हैं :

((من شغله القرآن عن ذكري ومسألتي أعطيتُه أفضل ما أعطي السائلين وفضل كلام اللّٰه على سائر الكلام كفضل اللّٰه على خلقه)).

---

1 "شعب الإيمان"، الحديث:٥٧٢، ج١، ص٤١٣

2 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है सारी बादशाहत और उसी के वासिते सब ख़ूबियां, सारी भलाई उसी के हाथ में है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है और हम उस के हुज़ूर गरदन रखे हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, अगर्चे बुरा मानें मुश्रिक, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं जो हमारा रब और हमारे अगले बाप दादाओं का परवर्द गार है।

"شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الوقوف بعرفات، الحديث:٤٠٨٠، ج٣، ص٤٦٦، بألفاظ متقاربة.

www.dawateislami.net

''जिसे तिलावते क़ुरआने मजीद मेरे ज़िक्र और मेरे सुवाल से रोक दे उसे अफ़्ज़ल उस का दूं, जो तमाम साइलीन को अ़ता करूं।''

फिर फ़रमाया : ''और बुज़ुर्गी कलामे इलाही की तमाम कलामों पर ऐसी है जैसे बुज़ुर्गिये रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ, उस की तमाम मख़्लूक़ पर।''

قال الترمذي:حديث حسن (इमाम तिरमिज़ी ने इस ह़दीस को ह़सन कहा)।[1]

واللّٰه سبحنه وتعالى أعلم بالصواب.[2]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

दाढ़ी रंगने की फ़ज़ीलत

''**शर्हुस्सुदूर**'' सफ़ह़ा 152 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है : जो शख़्स दाढ़ी में ख़िज़ाब (काले ख़िज़ाब के इ़लावा मसलन लाल या ज़र्द मेहंदी का) लगाता हो। इन्तिक़ाल के बा'द मुन्कर नकीर उस से सुवाल न करेंगे। मुन्कर कहेगा : ऐ नकीर ! मैं उस से क्यूंकर सुवाल करूं जिस के चेहरे पर इस्लाम का नूर चमक रहा है।

---

1 "سنن الترمذي"، كتاب ثواب القرآن، الحديث:٢٩٣٥، ج٤، ص٤٢٥

2 दुरुस्ती का बेहतर इ़ल्म अल्लाह سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی को है।

www.dawateislami.net

मेहंदी लगाने का त़रीक़ा

पानी डालते वक़्त मेहंदी में जो गांठें बन जाएं उन्हें चम्मच वग़ैरा से मसल दीजिये और भिगोने के कम अज़् कम आधे घन्टे बा'द इस त़रह़ लगाइये कि हर सफ़ेद बाल की नोक से ले कर जड़ तक ख़ूब अच्छी त़रह़ मेहंदी पहुंच जाए, आधे बल्कि एक घन्टे (या इस से भी ज़ियादा वक़्त के) बा'द धो लीजिए, अगर मज़ीद बेहतर रंग चाहते हैं तो इसी पर दोबारा मेहंदी लगाइए ❁ मज़ीद बेहतरी के लिए चाय की पत्ती उबाल कर उस के पानी में मेहंदी भिगोइये और ऊपर से लीमूं निचोड़ दीजिए ❁ मेहंदी लगाने के चार पांच दिन बा'द मूंछ, निचले होंट के नीचे और चेहरे के गिर्द जहां से बाल जमने शुरूअ़ होते हैं वहां जड़ में सफ़ेदी नज़र आने लगती है लिहाज़ा पूरी दाढ़ी पर न लगाना चाहें तो सिर्फ़ सफ़ेदी वाले ह़िस्सों पर थोड़ी सी मेहंदी लगा लिया करें ❁ सफ़ेद दाढ़ी पर कम अज़् कम माहाना एक बार बल्कि चाहें तो हफ़्ते दो हफ़्ते बा'द भी मेहंदी लगाई जा सकती है ❁ सर या दाढ़ी में मेहंदी लगा कर सो जाना आंखों के लिए मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है, (एक नाबीना ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को बताया कि 10 साल क़ब्ल काली मेहंदी लगा कर मैं सो गया था, उठा तो नज़र जा चुकी थी) ❁ ईद हो या शादी मर्द को मेहंदी से हाथ पाउं रंगना गुनाह है। (छोटे मुन्ने के हाथ पाउं भी मेहंदी से न रंगें, बच्चे को गुनाह नहीं होगा, रंगने वाला गुनाहगार होगा) ❁ मेहंदी ख़रीदने के बा'द एक आध माह के अन्दर अन्दर इस्ति'माल कर लीजिए क्यूं कि हो सकता है मुद्दत पूरी होने वाली हो। जब मेहंदी काली पड जाए, सख़्त गांठें बन जाएं और भिगोने की सूरत में चिकनाहट न हो तो येह इस बात की अ़लामत है कि इस की मुद्दत ख़त्म हुई।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

14 जुमादल उला 1433 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अच्छी बात !

शूगर "मीठा" खाने से होती है "मीठा" बोलने से नहीं । लिहाज़ा "मीठा" खाएं कम, मगर "मीठा" बोलें ज़ियादा।

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net